संक्षिप्त नमूना

स्वस्थ मसीही अगुवे के विकास हेतू नमूने का सारांश

अगुवे के विकास के 5C पर आधारित लक्ष्य

हमारे नमूने के आधार पर, एक स्वस्थ मसीही अगुवा परमेश्वर (मसीह) को जानता है, एक समर्थक व जिम्मेदार समाज (समाज), में बनाया जाता और जीवन व्यतीत करता है, ईमानदार होता (चरित्र) है, परमेश्वर के उददेश्य को जानता और उसको विश्वसनीयता,स्पष्टता और जुनून (बुलाहट) को प्रगट करता, और उसमें लोगों की उनके उद्देश्यों को पूरा करने में अगुवाई करने के लिए ज़रूरी वरदान, कौशल और ज्ञान होता है(योग्यताओं)और वह लगातार इन पाँचों क्षेत्रों में बढ़ता है।

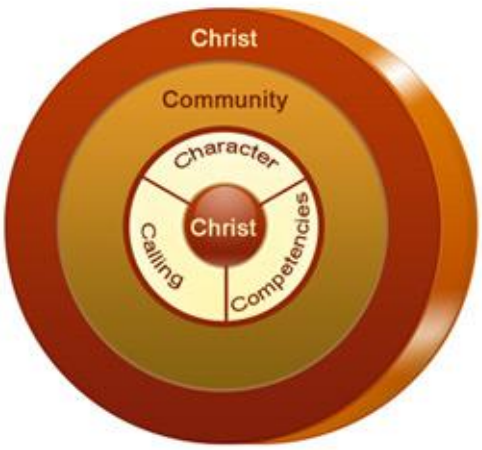

अधिकतर, अगुवों के विकास में हम केवल पिछले "Cs" पर ध्यान देते हैं। जब कोई जवान युवा या युवति अगुवा बनने के लिए बाइबल स्कूल में दाखिला लेता है तो उन्हें वहां क्या सिखाया जाता है? योग्यताओं के बारे में! हो सकता है कि कुछ ध्यान उनके अन्य चार प्रमुख घटकों या क्षेत्रों पर भी दे दिया जाए, लेकिन "अगुवों का विकास" करते समय हमारा ज्यादातर ध्यान उनकी योग्यता या क्षमता को विकसित करने पर बीतता है जैसे कि बाइबल का ज्ञान, कैसे प्रचार करना चाहिए, या दूसरों को किस प्रकार सलाह देनी चाहिए इत्यादि। योग्यताओं में विकास निश्चय ही अगुवों के विकास में जरूरी है लेकिन पर्याप्त नहीं। जिसके परिणाम स्वरूप आज अगुवों में "मतभेद" हैं।

योग्यताओं का विकास करना महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके आधार पर यह सुनिश्चित नहीं किया जा सकता कि अगुवों के जीवन का दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा या वे अपने पीछे कोई पदचिन्ह छाड़ जाएंगे। बहुत से अगुवे बड़ी बड़ी उपलब्धियां प्राप्त कर लें मगर वे काफी नहीं हैं। रोबर्ट क्लिंटन के अनुसार, अगुवाई के प्रभाव की सीढ़ी पर सफलतापूर्वक चढ़ने वाले 70 प्रतिशत अगुवे सफलता पूर्वक अपनी यात्रा को समाप्त नहीं करते हैं। कई अगुवे नाटकीय तरीके से असफल हो जाते हैं तो, कुछ नैतिक बुराईयों के शिकार हो जाते हैं, और अपना प्रभाव खोने वाले ज्यादातर अगुवे कहीं अंधेरों में खो कर रह जाते हैं। उनमें कमी रह जाती है क्योंकि उनकी बाहरी तार पर सफल दिखने वाले जीवन में,अगुवों की योग्यता में विकास और अगुवों के चरित्र में विकास के बीच अलगाव होता है।

चरित्र रहित होने के कारण बहुत से अगुवे ज्यादातर अपनी क्षमाताओं की पूर्णता तक नहीं पहुंच पाते; और चरित्र में यह कमी अगुवों के जीवन में मसीह और समाज से रिश्ते में कमी होने की वजह से हो सकती है।

इसो तरह, 14 राष्ट्रों द्वारा किये गये अनुसंधान से पता चला है कि मिश्नरी सेवाओं से दु:खी होकर जल्दी वापस आ जाने के प्रमुख कारण (पुराने समय से भेजने वाले या नये नये भेजने वाले देशों में) उनका मिशन पर दिया गया औपचारिक प्रशिक्षण नहीं था। योजनाओं का पता चला कि इसके मुख्य कारण मिश्नरी के आत्मिक जीवन से जुड़े बहुत से मुद्दे, चरित्र और उनके सम्बन्ध थे। दूसरे शब्दों में अगर कहा जाए तो मिश्नरियों की योग्यता में कमी उन्हें मैदान छोड़ने के लिए मज़बूर नहीं करती वरन अन्य क्षेत्रों में अपर्याप्तता को हम इसका जिम्मेदार ठहरा सकते हैं। ये असल में वे क्षेत्र हैं जिन पर प्रशिक्षण के दौरान ज्यादा चर्चा नहीं की जाती अर्थात मसीह, समाज, और चरित्र (इसमें सन्देह नहीं है कि अनुसंधान द्वारा विशेषतौर पर बुलाहट के बारे में नहीं बताया गया अन्यथा वह क्षेत्र भी सामने आ जाता)।

ConneXions नमूने में हम सम्पूर्ण अगुवे पर कार्य करते हैं, न कि सिर्फ अगुवे के सिर पर। हमार प्रमुख लक्ष्य एक अगुवे का यीशु मसीह के सिद्ध स्वरूप में रूपान्तरण है।

स्वस्थ अगुवे के विकास की 4D प्रक्रिया

यदि हम मानते हैं कि एक स्वस्थ मसीही अगुवे में केवल शैक्षिक योग्यता ही नहीं वरन सारे 5Cs होने चाहिए तो यह तुरन्त स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे अगुवों को तैयार करने पर बातें करना आसान है मगर करना बहुत मुश्किल काम है। किसी व्यक्ति को सेमिनार में भेजना या उसके विकास को नज़र में रखते हुए उसे पढ़ने के लिए कोई किताब दे देना काफी नहीं है। अगुवों को निर्माण करना एक जटिल काम है और कोई भी इसे पूरी तरह नहीं समझ पाया है। परिणाम स्वरूप, बहुत सी संस्थाओं में, इसे पूरी तरह से समय व संयोग पर छोड़ दिया जाता है। हम इस विषय पर बातें तो करते हैं, लेकिन उसके लिए आवश्यक प्रयास नहीं कर पाते। थोड़ा बहुत प्रयास जो अगुवों के निर्माण में किया जाता है वह सोची समझी रणनीति के तहत नहीं वरन संयोग से होता है। जवानों को बाइबल स्कूल भेजने को छोड़कर हम सामान्य तौर पर यह सोचते है कि वह अपने आप अगुवा बन जायेगा। जब किसी अगुवे से पूछा गया कि आपकी अगुवा निर्माण करने की रणनीति क्या है तो उन्होंने कहा,"आपको केवल मलाई के ऊपर आने का इन्तज़ार करना होता है"। दूसरे शब्दों में कहें तो," हमारे पास अगुवों के निर्माण के लिए कोई विशेष योजना नहीं

है ; लेकिन हम विश्वास रखते हैं कि सबकुछ अच्छा होगा!"

परिणामस्वरूप, कई बार, अगुवों का निमार्णकारी प्रयास केवल पाठयक्रम या विषयों की सूची तक सीमित होकर रह जाता है। निमार्ण करने की उचित प्रक्रिया पर ज्यादा समय खर्च नहीं किया जाता है, जिसमें विषय सूची और सन्दर्भ दोनों शामिल होते हैं।

अगुवों को तयार करने हेतू यीशु द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला तरीका मरकुस 3 में दिया गया है:

> तब उसने बारह पुरूषों को प्रेरित करके नियुक्त किया कि वे उसके साथ साथ रहें, और वह उन्हें भेजे कि वे प्रचार करें, और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें।
>
> (मरकुस 3:14-15)

इस सरल व गहन वाक्य में हमें यीशु द्वारा अगुवों का निर्माण करने के तरीके का निचोड़ मिलता है। यीशु ने अपने उभरते हुए अगुवों के आस पास एक रूपान्तरणकारी माहौल तैयार किया:

- एक आत्मिक माहौल जिसमें परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाने को शामिल किया जा सके(उसके साथ रिश्ता बने तथा साथ ही साथ प्रार्थना के माध्यम से अगुवे परमेश्वर पिता से सम्बन्ध बना सकें)

- एक सम्बन्धों का जाल, जिसमें परिपक्व अगुवे(अपने)के साथ सम्बन्ध, और दूसरों के साथ सम्बन्ध(चेलों के समुदाय)बनाना शामिल हो।
- एक अनुभवों का माहौल, जिसमें चुनौतिपूर्ण कामों को सौंपना, दबाव व सीखने के विविध अवसर शामिल हों।

फिर उसने रूपान्तरणकारी माहौल में,उन्हें शिक्षा प्रदान की -अर्थात उन्हें उन्नति करने का तरीका बताया।

संक्षेप में, यीशु ने इसी तरीके से अपने अगुवों का निर्माण किया था। अत: माहौल + विषय वस्तु = अगुवे के विकास की प्रक्रिया।

परम्परागत तौर पर हम अपने उभरते अगुवों को क्रम से लगी हुई मेजों के पीछे कुसियों पर बैठे देखना और उनका निर्माण करने के लिए उन्हें असीम भाषण देना पसन्द करते हैं। हम अपनी विषय वस्तु में बहुत मज़बूत होते हैं लेकिन हम अगुवों की बढ़ौत्तरी के लिए जरूरी माहौल बनाना भूल जाते हैं।

सामान्यत: अगुवों के विकास कार्यक्रम में हमने ज्यादातर निर्देशों पर ध्यान केन्द्रित किया है। फिर भी हमें पर्याप्त मात्रा में चारों " रूपान्तरण के विशेष तत्वों" पर ध्यान देना चाहिए।

- आत्मिक
- सम्बन्धात्मक
- अनुभव कारी
- निर्देशात्मक

इस तरीके से लोगों के जीवन परिवर्तित हो जाते हैं। जब ये चारों तत्व मज़बूती से एक साथ उपलब्ध होते हैं तो आपके आत्मिक जीवन का पोषण होता है, सम्बन्धित क्षमताओं को मज़बूती मिलतो है, चरित्र निर्माण होता है, बुलाहट स्पष्ट हाती है और अगुवाई की गहन योग्ताओं का निर्माण होता है।

प्रारम्भिक कलीसियाओं में भी इन बातों को अभ्यास किया जाता था:

> और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहें। (प्रेरितों 2:42)

वे चारों मुख्य तत्वों को करने में लौलीन रहे:

- प्रेरितों से शिक्षा पाने में -निर्देशात्मक
- संगति में -सम्बन्धात्मक
- रोटी तोड़ने-अनुभवों के क्षेत्र में
- प्रार्थना -आत्मिक

लेखक ने सारे संसार भर में रहने वाले, अनेकों प्रकार की पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखने वाले सैकड़ों मसीहियों से इन प्रश्नों को पूछा है कि,"आपको किस प्रकार बनाया गया था? आप कैसे वह अगुवे बन पाये जो अभी आप हो? अधिकतर लोग मजबूती से जवाब में कहते हैं, अभिभावक,आदर्श, उदाहरण, मार्गदर्शक,कष्ट, जिम्मेदारियां, अस्विकृति,असफलता, और चुनौतिपूर्ण कार्य इत्यादि। सामान्यत: कोई व्यक्ति उन्हें किसी कोर्स के बारे में बताता है, और जब वे ऐसा करते हैं तो शिक्षक और विद्यार्थियों को याद रहने वाली शिक्षाएं उस विद्यार्थी के जीवन पर व्यक्तिगत तौर पर प्रभाव डालती हैं।

इन बातों से हमें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए, क्योंकि सुसमाचार का अध्ययन हमें बताता है कि यीशु ने भी अपने चेलों के साथ यही काम किया। उसकी योजना केवल निर्देशात्मक नहीं थी; उसने अगुवों के विकास के लिए उपयुक्त परिवर्तनकारी माहौल तैयार किया,जिसमें आत्मिक, सम्बन्धात्मक और अनुभवात्मक तत्व भी शामिल थे।

यह कोई मनोबल गिराने वाला माहौल नहीं था। हमारे पास एक मज़बूत माहौल होना चाहिए, निश्चय ही निर्देश ConneXions नमूने के चार रूपान्तरणकारी प्रमुख तत्वों में से एक है। लेकिन केवल माहौल बनाना ही काफी नहीं है। जीवनों को बनाने के लिए हमें ऐसे

रूपान्तरणकारी माहौल का निर्माण करना चाहिए जो आत्मिक, सम्बन्धात्मक और अनुभवों के क्षेत्र में मज़बूत हो।

इस बात को समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरणों पर ध्यान दें। मान लीजिए कि हम एक पचारक को तैयार करना चाहते हैं। हम चाहे तो उसे अविश्वासियों के बीच मं सुसमाचार सुनाने के लिए भेजकर एक अनुभवकारी अवयव से प्रारम्भ कर सकते हैं। "जाओ और इस काम को पूरा करो!" क्या इससे काम चल जाएगा? क्या वे ऐसे सुसमाचार प्रचार के बारे में सीख जाएंगे? निश्चय तौर नहीं।

चलिए अब इसमें हम किसी अनुभवी प्रचारक को साथ में भेजकर, जिसे वह नव अगुवा देख सके और जो उन पर निगाह रखे, प्रोत्साहित करे और उनमें सुधार करे, सम्बन्धात्मक अवयव को जोड़ देते हैं। स्पष्ट तौर पर यह तरीका और ज्यादा बेहतर तरीके से काम करेगा।

चलिए अब जाने से पहले प्रार्थना करवाने के लिए उभरते हुए अगुवे को पार्थना करवाने के लिए मध्यस्थों से मिलने के द्वारा इसमें एक औ मज़बूत आत्मिक अवयव को जोड़ दें। वे भटके हुए अर्थात मसीह से वंचित लोगों के लिए परमेश्वर के बोझ तथा आंसूओं के साथ प्रार्थना करेगें। फिर, वे सुसमाचार प्रचार करने के लिए जाते समय परमेश्वर से सहायता मांगेगे, उससे पूछेगें कि हमें किसके पास जाना चाहिए और लोगों से बात करने के लिए सही शब्दों के दिये जाने का इन्तज़ार करेगें। इस तरीके काम और भी अच्छा होगा।

अन्त में, आईये उन्हें कुछ निर्देश दें- अर्थात सुसमाचार प्रचार के अर्थ और स्वभाव पर एक पाठयक्रम, उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना पर अध्ययन, अपनी गवाही और सुसमाचार सुनाने का एक सरल तरीका, सुसमाचार के विरूद्ध सामान्य आपत्तियां और उनके प्रति प्रतिउत्तर इत्यादि। अब हम मज़बूत प्रचारकों को तैयार कर रहे हैं।

यह साधारण उदाहरण शिक्षाप्रद अनुभवों की रूपरेखा तैयार करने की शक्ति प्रगट करता है, जिसमें रूपान्तरण करने वाले चारों अवयवों 4Ds को शामिल किया गया है। इसी तरीके से जीवन बदले जाते हैं; इसी तरीके से अगुवों का निर्माण होता है।

जिस प्रकार से हमारे लिए अगुवे के जीवन में सारे 5Cs (मसीह, समाज, चरित्र, बुलाहट और योग्यता या क्षमता)का निर्माण करना जरूरी होता है उसी प्रकार अगुवों के निर्माण की ऐसी प्रक्रिया तैयार करनी चाहिए जिसमें चारों रूपान्तरणकारी अवयव(आत्मिक, सम्बन्धात्म,अनुभवकारी, व निर्देशात्मक) शामिल हों। किसी एक को भी नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता है।

यह स्वस्थ मसीही अगुवे के विकास हेतू नमूने का सारांश है -जिसमें 4Ds द्वारा 5Cs का निर्माण किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

हमारे सम्पूर्ण मॉडल के लिए कृपया देखें: *मैलकम वैब्बर द्वारा लिखित :स्वस्थ अगुवे: आत्मा से निर्मित अगुवाई #2 व अगुवों को तैयार करना : आत्मा से निर्मित अगुवाई #4 A*

LeaderSource SGA
513 South Main St., Suite 2
Elkhart, IN 46516
Email: info@leadersource.org
Website: www.leadersource.org